पाठः 1 ईश- वन्दनम्

1 सिद्धिबुद्धिपते ! ---- नमो नमः ॥
भावार्थ → आप ही सिद्धि-बुद्धि के पति है और आप ही सिद्धि-बुद्धि प्रदान करते है। ब्रह्मा आदि देवता लोग आप ही से बुद्धि के लिए आते है आपको नमस्कार।

2. मतिदां वरदां ---- नमाम्यहम ॥
भावार्थ → बुद्धि को देने वाले को और सर्व-कामों का फल प्रदान करने वाले एवं केशव के प्रिय देवी वीणा को धारण करने वाली देवी को नमस्कार है।

3. ईशावास्यमिदं ---- धनम् ॥
भावार्थ → जगत में जो कुछ भी चलने वाले और स्थिर रहने वाले प्राणी है वे सब ईश्वर के द्वारा व्याप्त है। तुम त्याग पूर्वक ही भोग करो किसी अन्य के धन का लोभ न करो।

4. सर्वे भवन्तु ---- दुःख भाग्भवेत् ॥
भावार्थ → सब सुखी हो, सब नीरोग हो, सभी का कल्याण हो, कोई दुखी न हो।

Scanned by TapScanner

1 **रिक्तस्थानानि पूरयत।**

(क) ब्रह्मभूताय ढैवेरा सगुणाय नमोनमः।

(ख) मतिदां वरदां चैव सर्वकामफल प्रदाम्।

(ग) मा गृधः कस्य स्विद धनम्।

(घ) मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्।

2 **अस्य पाठस्य एकस्य श्लोकस्य अर्थं लिखत।**

3 **अस्य पाठस्य श्लोकद्वयं स्मृत्वा मित्रं श्रावयत।**

Scanned by TapScanner